प्रार्थना अनुभूति सागर

ੴ

अदना सेवक

जगदीश चन्द्र खुराना

अनुक्रम अंक 3

1 पुस्तक लिखने का उदेश्य, प्रेरेणा-स्त्रोत, आशीर्वाद अंक 6

पुस्तक पढ़ने ग्रहण करने से पुर्व निवेदन

2 प्रार्थना किसे कहते है? अंक 7

3 प्रार्थना कितने प्रकार की होती हैः? अंक 8

4 प्रार्थना कैसे करें ? अंक 9

5 प्रार्थना के लिये कैसा वातावण होना चाहियेः ? अंक 11

6 क्या प्रार्थना प्रभु का द्वार है? अंक 12

A प्रथम दौर (चरण) अंक 12

B दूसरा दौर (चरण) अंक 13

C तीसरा दौर (चरण) अंक 13

D चौथा दौर (चरण) अंक 14

E पाँचवा दौर (चरण) अंक 14

7 प्रार्थना की पराकष्ठा के लिये किन परिस्थितियों का परिनियोजन किया जाना जाहिये? अंक 15

8 प्रार्थना की स्वीकृती के लक्षण अंक 16

9 कई बार प्रार्थना बार बार करने पर भी मंजूर न होने का कारण क्या है? अंक 20

10 जब निर्धारित प्रार्थना स्थल पर किसी कारणवश नहीं पहुँच सकते तब प्रार्थना कैसे करें? अंक 21

11 प्रार्थना के क्या लाभ हैं? अंक 21

12 प्रभु आमने सामने दिखाई क्यों नहीं देता ? अंक 22

12a खुदा को दरकार अंक 23

13 क्या आध्यात्मवाद की राह पर बढने के लिये गुरू को अपनाना आवश्यक है? अंक 24

14 क्या प्रार्थना के लिये गुरू का अपनाना आवश्यक है ? अंक 24

15 कुछ संत फकीर सिमरण धन गुरू नानक और अन्य ओम नमो शिवायः का सिमरण करने की सलाह देते है, क्या अपनाना चाहिये? अंक 25

16 प्रभु के रूप व स्वरूप में क्या अन्तर है? अंक 25

17 क्या स्व-अनुभूति का प्रसाद संगत में बाँट सकते हैं? अंक 26

18 आध्यात्मिक राह का दौराहा अंक 26

19 प्रार्थना के सूत्रधार अंक 28

20 भावनाओं का पुल अंक 35

21 भक्त भगवान और फकीर के रिश्ते अंक 35

22 प्रार्थना भावनाओं का सैलाब अंक 35

23 प्रार्थना का रुप और स्वरूप	अंक 36
24 प्रभु से अंन्तरमन संवाद	अंक 39
25 जन मानस का र्दद	अंक 40
26 प्रभु का रूहानी संदेश	अंक 40
27 प्रभु से नज़दकियों की लौह	अंक 42
28 वास्वतिकाओ का आंगन	अंक 43
29 प्रभु को दरकार	अंक 44
30 प्रभु और फकीर का अंन्तरभेद	अंक 45
31 मन का मोबाइल	अंक 46
32 निराकार ,साकार और मुर्ति का अंन्तरभेद	अंक 48
33 प्राण प्रतिष्ठा और मन प्रतिष्ठा	अंक 48
34 मन मन्दिर का हवन सामग्री	अंक 49
35 प्रार्थना के बाधक तत्व	अंक 49
36 ज्ञान	अंक 51
37 मौज दे मसीहा	अंक 52
38 निर्णय न ले पाने की स्थिती	अंक 53
39 मन के बगीचे के फूल	अंक 53
40 प्रभु का मानसिक धन्यवाद	अंक 54
41 मुर्ति और मुकट का हार	अंक 55
42 तीसरी आँख	अंक 56
43 प्रार्थना के माध्यम से जानिये तीसरी आँख के नज़ारे	अंक 56
44 स्व-अनुभूति प्रसाद को बाटँना	अंक 59
45 सिमरण	अंक 60
46 सेवा	अंक 60
47 स्वमंथन	अंक 62
48 परमप्रावादिता	अंक 63
49 रहमतेप्रसाद	अंक 63

50 प्रार्थना का दायरा अंक 67
51 प्रार्थना की सोच अंक 67
52 खुदा के पास पहुँचने की कुंजी अंक 68
53 धूर की बाणी अंक 69
54 प्रार्थना और रेकी अंक 71
55 मंगला-चरण विमोचन अंक 73
56 पुस्तक की मांग अंक 74

नोटः

1 यह अनुभूति प्रसाद प्रभु की छत्रछाया में साध संगत की सेवा करते मिला है। प्रभु ने अब अनुभूति प्रसाद को साध संगत की झोली में डालने को कहा है।

नोटः2 इस अनुभूति प्रसाद का स्वरूप साधक की ग्रहणशीलता पर निर्भर करेगा जो भिन्न भिन्न साधकों का भिन्न भिन्न भी हो सकता है।

नोटः3 इस के प्रेरेणा-स्त्रोत हैं ईलाही फकीर बाबा अजीत सिहं जी जिन्हों ने मुझे साध संगत की सेवा डेरा बाबा बड़भाग सिंह की छत्रछाया में बिठा कर दी और सेवा के गुर सिखाये और गुरू नानक देव जी की लोच की लौह मेरे दिल में जलायी जिस से मैं तालमेल रख कर इस राह पर बढ़ता गया और अनुभूति प्रसाद की

बरखा लगातार होती गई। साध संगत का धन्यवाद करने के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं है सिवाय मन के बाग में सजाये फूलों के जो मैं आप के माध्म से प्रस्तुत कर रहा हूँ। कृपया स्वीकार करें।

<u>निवेदन</u>

लेखक साध संगत का मानसिक धन्यवाद करना चाहता है जिन के सहयोग और साथ की बदौलत इसे साध संगत को रूहानी तोहफे के रूप में भेंट करने का अवसर मिला , इन एकत्रित अनुभूतियों का लाभ लेने के लिये मानसिक एकरूपता और भावनात्मक मिलान कर ग्रहनशीलता बना कर पढ़े ,लाभ मिले गा। लेखक यह सुझाव देना चाहे गा कि आप अनुभूति सग्रह के रूप में पढें,पुस्तक के रूप में नहीं। इस अनुभूति सग्रह को अचानक कही से खोले और आप का ध्यान जिस अध्धाय की ओर जाये केवल उसी अध्धाय को पढ़े और मंथन करे कि यह आप की अनुभूतियों से मेल खाता है या नहीं, इस से रूहानियत की रफतार में वृधि हो गी।

1 <u>प्रार्थना किसे कहते है</u>?

प्रार्थना प्रभु को व आध्यात्मिक गुरू व किसी भी ईलाही फ़कीर को अपने मन मंन्दिर में आस्था ,श्रद्धा और विश्वास के पात्र में मन के बगीचे में सजायी भावनाओं के सुगन्धित फूलों के साथ सीधे समर्पित की जाती है। यह बिन बोले भाव व बोले भाव भी हो सकते है। ऐसा देखा गया है कि प्रार्थना की कोई भाषा,परम्परा, विधि या प्रक्रिया नहीं होती, केवल भाव तथा उस के बीच तरंगों का मिलन और समर्पण के सूत्र एक-दूसरे से जुडे होते हैं जिन्हे प्रभु को सीधे समर्पित

किया जाता है । बिना बोले भावनाओं के साथ की गई प्रार्थना अधिक प्रभावशाली होती है क्योंकि यह प्रभु और साधक के बीच की निकटता और रिश्तों की माला है जो साधक प्रभु को सीधे समर्पित करता है, इस प्रार्थना का परिणाम होता है प्रभु का आशीर्वाद और साधक की इच्छा पूर्ति । कई साधक निशान साहिब व विशेष स्थल पर भी प्रार्थना करते हैं उन की प्रार्थना तुरन्त स्वीकार होती पाई गई है। साधक की इच्छा रूहानी ,सांसरिक व आर्थिक

भी हो सकती है। सहज भाव में की गयी प्रार्थना की इस दुनिया में कोई काट नहीं होती, कोई तन्त्र यंन्त्र व मन्त्र इसे नहीं काट सकते, प्रार्थना सब से ऊँची है। प्रभु को प्रार्थना कभी भी, कहीं भी कर सकते हैं। प्रार्थना प्रभु की छत के नीचे (आकाश) तरू तले ,सैर करते हुए, यात्रा करते हुए, लय की लौह में भी हो सकती है। प्रार्थना में शब्द नहीं होते केवल भावनाओं का सैलाब होता है, जिस में साथ क्षद्धा ,आस्था एवं समर्पण तथा अन्तरमन की मांग की ललक जुड़ी होती हैं।

2 <u>प्रार्थना कितने प्रकार की होती है</u>?

1 स्वेछित प्रार्थना 2 व्यक्तिगत प्रार्थना 3 विशेष प्रार्थना 4 जनहित प्रार्थना 5 सामूहिक प्रार्थना

सामूहिक प्रार्थना करते समय पहले ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जिस से साध संगत प्रभु से जुड सके और उपस्थित सभी साधकों मे मानसिक एकरूपता उद्धित हो सके।

मानसिक प्रार्थना

प्रभु को दुनिया के किसी स्थान से, कहीं भी की जा सकती है, मानसिक प्रार्थना का कोई निश्चित स्थान, समय,प्रार्थना प्रक्रिया ,अवधि व भाषा नहीं होती ।

सामुहिक प्रार्थना की स्वीकृति का मूल मन्त्र है कि दूसरे की भलाई के लिये की गई प्रार्थना , यह प्राय: कारगर होती है पर स्वयं के लिये की गई प्रार्थना बहुत बार कारगर नहीं होती क्योकि उस में निस्वार्थ भाव की कमी रह जाती है , मन में एकरूपता की कमी रह जाती है।

1 प्रत्येक प्रकार की प्रार्थना में सहज और समर्पित भाव ही प्रदर्शित हो।

2 प्रभु को बिन बोले भावों का समर्पण और मन मंन्दिर के बाग में सजाये सुगन्धित फूलों का प्रभु को सीधा प्रस्तुतीकरण

3 अपने मन की इच्छा पूर्ति की स्थिती और सकारात्मक प्रार्थना में मानसिक मिलान

3 <u>प्रार्थना कैसे करें?</u>

प्रार्थना करने के सूत्रधार हैं ,

1 साधक के मन में उपजे भाव

2 मन का शुद्धीकरण, वैर, द्वेष, इर्षा से मुक्ति। अहं और द्वेष ऐसे खट्टे आचार के टुकड़े हैं जो कई बार बिन बुलाये जीवन में प्रवेश कर लेते हैं और साधक के मन की स्थिती को तहस-नहस कर देते हैं।

3 प्रभु और साधक के बीच की निकटता और सीधे रिश्ते

4 सहज और समर्पित भावनाओं में निखार

5 साधक प्रार्थना के किस दौर से गुज़र रहा है (परिपक्वता की स्थिती)

6 साधक प्रार्थना को स्वयं कर रहा है या अन्य किसी व्यक्ति के

माध्यम से करवा रहा है।

7 प्रार्थना का रूप और स्व-इच्छा के उदगार जब इस के मिश्रित रूप सहज और समर्पित भाव मे प्रार्थना

प्रस्तुत की जाये तो प्रार्थना तुरन्त स्वीकार्य होगी।

उपर बताये गये सूत्रों को मन की पोटली बना कर प्रार्थना करें।

के रूप में प्रस्तुत करें।

8 प्रार्थना में सहज ज्ञान, स्व-अनुभूति और समर्पण भाव साधक के मानक मंन्त्र है। प्रार्थना करते समय मन के द्वार खोल कर भावनात्मक तरंगों से प्रार्थना करे ,मुँह से ,भाषा के भाध्यम से बोल कर न करें भावनात्मक प्रार्थना प्रभु तुरन्त स्वीकार होती है।

9 आध्यात्मवाद सहज ज्ञान की अनुभुति से उपजा महासागर है । इसे ज्ञान और धर्मवाद का मिश्रण मानकर ज्ञान स्वीकार कर लेना आध्यात्मवाद के विरूद्ध है।

10 शब्दों पर लगाम भावनाओं में समुदर और उदगारों में लहरें प्रार्थना की नींव है।

11 जब प्रार्थना की आवाज़ एवं उद्गार ध्वनि में परिवर्तित हो जाये तो यह प्रार्थना के सुरों का रूप ले लेते हैं।

12 जब प्रार्थना करते समय स्वयं की अनुभूति खत्म हो जाये तब प्रार्थना में यह प्रभु की निकटता को दर्शाता है ।

13 प्रभु से प्रार्थना करते समय अपने मन के दरवाजे खुले रखें, मन पर किसी प्रकार का दबाव व घेराबन्दी न करें ।

14 प्रार्थना के लिये कैसा वातावण होना चाहिये?

प्रार्थना के समय मन को एकाग्रित कर के प्रार्थना रखें इधर ऊधर मन को विचलित न होने दे। आप का मन प्रभु की दरगाह है। खुदा कब, कहाँ, किस रूप में मिल जाये, इसे उस का एक अजूबा ही समझो। यह खोज की परिधि से परे है। कई बार भजनकर्ता और प्रभु की भजनों द्वारा स्तुति सकारात्मक स्थिती बनाने मे सहायक होती है।

यह भी अनुभव किया गया है कि एक छोटे बच्चे द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना तुरन्त स्वीकार होती है क्योंकि इस में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती।

5 <u>क्या प्रार्थना प्रभु का द्वार है</u>?

सहज और समर्पण भाव में प्रस्तुत प्रार्थना प्रभु के निकट पहुँचने का द्वार है। प्रार्थना प्रभु दर्पण की नींव है । जब प्रभु का द्वार आगे से बन्द हो तो आप प्रभु के पास पिछले द्वार से प्रवेश कर सकते हैं इसे प्रार्थना द्वार कहा जाता है। प्रभु का द्वार बन्द होने के कारण कई हो सकते हैं, सब से बडा कारण प्ररमपरावादियों का जमावडा और बाधा डालना होता है। अब तक मिले अनुभवों के अनुसार प्रभु तक पहुँचने हेतू पाँच दौरों से गुज़र कर जाना पडता हैं। कुछ साधक इसे प्रार्थनाकर्ता की मानसिक स्थिती का दर्पण भी कहते हैं। इसे साधक की प्रार्थना के चरणपग भी कहा जाता है।

1 प्रथम दौर (चरण)

प्रार्थना के प्रथम चरण की शुरूआत साधक के जीवन में किसी गुरू, फकीर, माता पिता व अनजान व्यक्ति की प्ररेणा के माध्यम से हो सकती है।यह प्रभु के द्वारा अपने अन्दर जाग्रित संदेश व स्वविवेक से भी हो सकती है।यह किसी स्थान पर एकत्रित रूहानी लगाव के प्रियजनो के माध्यम से हो सकती है। इस दौर में साधक को प्रभु की मौजुदगी का एहसास होता है।

2 दूसरा दौर (चरण)

इस दौर में प्रभु के साथ जुडाव लगने लगता है और कुछ क्षणों के लिये लौ जुड जाती है और फिर कुछ ही क्षणों में लय टूट जाती है। साधक की चाहत होती है कि यह लौ टिकाऊ बन सके। इस दौर में लगाव प्रभु से स्वमं बन जाता है और स्वतः ही टूट जाता है। यह मंदिर, मसजिद, गुरूद्ववारे या ऐकान्त मे भी हो सकता है। यह सामुहिक प्रार्थना के माध्यम से भी हो सकता है।

3 तीसरा दौर (चरण)

इस दौर में साधक प्रभु से निकटता की अवधि को बढ़ाना चाहता है। और प्रभु के उस स्वरूप को देखते रहना चाहता है जिस से प्ररेणा मिली।

यह स्वरूप गुरू नानक देव जी, शिव जी ,मां भगवती या अन्य कोई स्वरूप भी हो सकता है।

कई बार साधक के चाहने पर व बार बार प्रभु से हाथ जोड कर आग्रह करने पर भी टिकाउ नहीं रहता। कई बार प्रभु स्वयं प्रकट हो जाते है कही भी। यह साधक की मनोस्थिती पर निर्भर होता है।

4 चौथा दौर (चरण)

इस दौर में साधक प्रभु से प्रार्थना में समर्पण के माध्यम से निकटता मांग करता हैं और प्रभु के अपने साथ रहने की फरियाद लगाता है चाहे वह कोई भी स्थान हो या साधक प्रभु की लै मे लीन सैर कर रहा हो गाडी चला रहा हो या बस या ट्रेन या हवाई ज़हाज में बैठा सफर कर रहा हो प्रभु को अपने अंगसंग देखना तथा साथ चाहता है। साधक की प्रार्थना सार्थक और सकारात्मक परिणाम मिलते हैं वह खुशी से फूला नहीं समाता।

5 पाँचवा दौर (चरण)

अभी तक अनुभूति से प्राप्त अनुभवों में अंतिम चरण है। इस दौर में साधक प्रभु को सदा हर क्षण कुछ भी करते हुए अपने साथ रखना चाहता है कि हर क्षण वह प्रभु से विचार विमर्श कर के आगे बढता रहे। साधक और प्रभु एक दूसरे के मित्र और साथी बन जाते हैं। साधक जब चाहे जिस रूप में चाहे प्रभु के दर्शन कर पाता है। कई बार प्रभु से होनी को अनहोनी में बदलवा सकता है। इस दौर में साधक की स्थिती एक फ़कीर की बन जाती है और रिश्ते आध्यात्मिक और रूहानी रंग के बन जाते हैं। साधक जहाँ कहीं चाहे प्रभु से मिल सकता है।

6 <u>प्रार्थना की पराकष्ठा के लिये किन परिस्थितियों का परिनियोजन किया जाना जाहिये?</u>

प्रार्थना में परिपक्वता लाने हेतु 5 दौरों से गुज़रना पड़ता है। प्रार्थना करते समय अपने ध्यान व उद्देश्य को विकेन्द्रित न होने दें प्रार्थना स्वयं करने पर अधिक प्रभावशाली होती है क्योकि किसको कितना दर्द है यह वह ही जान सकता है, अन्य नहीं,दर्द है वही जानता है अन्य प्रार्थनाकर्ता उतना दर्द नहीं महसूस कर

सकता ।प्रार्थना के द्वारा प्रभु को अपनी इच्छों का प्रकटीकरण करे। आप के आसपास अन्य साधक खडा है इस का एहसास

मन में मत होने दो।

7 <u>प्रार्थना की स्वीकृती के कुछ लक्षण इस प्रकार</u> हैः

कई बार प्रार्थना करते समय कुछ लक्षण महसूस किये जाते हैं और कई बार कुछ भी उस समय महसूस नहीं होता, बाद में

पता लगता है कि महसूस किये गये कुछ लक्षण इस प्रकार अनुभव किये गये जब भी आप प्रार्थना करते है और आप मानसिक रूप से सहज समर्पण भाव मे प्रार्थना प्रभु को समर्पित कर रहे हैं, किसी स्थान पर हो चाहे वह मन्दिर, मसजिद,गुरूद्वारे चर्च व अज्ञात स्थान हो आप दिव्य मुर्ति के सामने खडे हो अथवा एकान्त में हो तो आप

(i) एक विशेष प्रकार की महक महसूस करेगें जो आप को आनन्दमयी बना देती है ।

(ii) कई बार मानव दिव्य ज्योति जला फर समर्पित भाव मे प्रार्थना करते हुए टकटकी लगा कर भक्त दिव्य ज्योति मे देखता रहता है, तब दिव्य ज्योति मे कई बार उसे उस दिव्य रूप का वह प्रतिबिम्ब दिखाई देता है जिस की साधक आराधना करता है ।

(iii) कई बार दिव्य ज्योति के पीछे काली तलहटी पर दिव्य मूर्ति का स्वरूप दिखाई देता है जिसकी उस के मन में परिकल्पना है । कई बार यही

स्वरूप भिन्न भिन्न साधकों / व्यक्तियों को भिन्न भिन्न दिखाई देता है । यह स्वरूप समर्पित भावनाओं के अनुसार बदलता भी रहता है ।

(iv) कई बार दिव्य ज्योति का स्वरूप व आकार भी बदलता रहता है, कई बार दिव्य जोत दो या तीन दिव्य ज्योतियों मे बदल जाती है ।

(v) कई बार दिव्य ज्योति के स्वरूप बार बार बदलते रहते हैं ।

(vi) कई बार किसी को कोई रूप दिखाई देता है अन्य को कोई और दिखाई देता है ।

(vii) कई बार दिव्य मूर्ति के समुख्य खड़े हो प्रभु को एक लोटे में दूध या जल ले कर अभिषेक करना चाहते हैं तो लोटा स्वतः कांपने लगता है ।

(viii) कई बार जब आप दिव्य मूर्ति के समुख्य खड़े हो आराधना कर रहे हैं तो दिव्य मुर्ति से प्रकाश की किरणें निकल कर आपकी ओर आती हैं और आप को रोमान्चित कर देती हैं ।

(ix) कई बार यह किरणें दिव्य मूर्ति के हाथों से निकल कर आती हैं और कई बार यह किरणें नाभी से निकल कर आती हैं ।

(x) कभी कभी इस दिव्य मूर्ति स्वरूप किसी मन्दिर, गुरूद्वारे

के गुम्बद पर भी दिखाई देती है, कई भक्तो को दिखाई नहीं देती ।

(xi) कई बार एकान्त व विरान खडी ईमारत पर भी दिखाई देती है ।

(xii) कई बार निशान साहिब जी के उपरी भाग व अन्य किसी भाग मे जलती दिव्य ज्योति के रूप मे भी दिखाई देती है ।

(xiii) कई बार निशान साहिब के उपरी भाग मे दिव्य मूर्ति स्वरूप मे भी दिखाई देती है ।

(xiv) कई बार शान्त वातावरण मे नाद के स्वर सुनाई देते हैं ।

(xv) कई बार मन्दिर की घन्टियां स्वतः बजने की आवाज सुनाई देती है।

(xvi) कई बार दिव्य मूर्ति एक या कई बार दोनों हाथ ऐसी दिशा मे दिखाई देते हैं कि आप को आशीर्वाद मिल रहा हो ।

(xvii) कई बार जब आप निशान साहिब के सामने खड़े हो कर प्रार्थना करते हैं तो आप की फैलाई झोली मे अचानक फूल, सिंदूर या अन्य कोई चीज़ आ कर गिर जाती है, यह प्रभु का आशीर्वाद है ।

(xivii1) प्रार्थना की स्वीकृति पर प्रभु का मानसिक धन्यवाद

करना मत भूले ।

(x1x) कई बार आप सो रहे हैं या आप किसी स्थान पर खड़े हैं जहाँ आप के सामने प्रभु या ईलाही फकीर की कोई फोटो टंगी है तो आप देखते हैं कि फकीर की मूद्रायें समय समय पर परिवर्तन होती रहती हैं । कभी वह आप को आशीर्वाद देती दिखाई देती हैं कभी गुस्से की मुद्रा मे दिखाई देती है।कभी आप ईलाही फकीर की आँखों की ओर देखते है और आप की आँखे दो चार होती हैं तो आप उस में कोई सन्देश

आता हुआ महसूस करते हैं:

1 बच्चू ! तू किधर फिरदां है ज़रा मेरे कोल ते आ।

2 बच्चू ! मैं ता तेरे बगैर ओदर गया हां।

3 बच्चू ! अज रज रज गलवकडियां पान दा जी करदां है।

4 बच्चू ! कि सोचदा हैं?

(xx) कई बार आप सी सी टी वी पर निशान साहिब की ओर देखते है तो आप निशान साहिब पर ईलाही फकीर व प्रभु का प्रतिबिन्ब दिखाई देता है, साधक के मन की स्थिती को आप देख सकते हैं और साधक और बीच की तरंगों की भी देख सकते हैं।

8 <u>कई बार प्रार्थना बार बार करने पर भी मंजूर न होने का कारण क्या है</u>?

बहुत बार प्रार्थना करने पर आप प्रार्थना को प्रार्थना के रुप में नहीं करते। प्रार्थना करते समय अपने भावों, उद्देश्य का केन्द्रीकरण नहीं कर पाते। कई बार प्रार्थना करते समय आप का मोबाइल बज जाता है तब आप का ध्यान प्रार्थना से टूट कर मोबाइल की ओर खिच जाता है। कई बार कोई आप को कोई बुला रहा तो आप का ध्यान प्रार्थना से टूट कर उस की ओर चला जाता है। कई बार कोई आस पास खड़ा मोबाइल पर बात कर रहा है या किसी अन्य से बात कर रहा है तो आप की रूची उधर ज्यादा हो जाती है और प्रार्थना रास्ते में ही टूट जाती है। कई बार आप प्रार्थना कर रहे है और कोई परिवार का सदस्य बुला लेता है आप की प्रार्थना रास्ते में ही टूट जाती है। कई बार बार बार एक ही तरह की प्रार्थना करने पर कई बार प्रार्थना प्रभु स्वीकार नही करते कयोंकि प्रार्थना की स्वीकृति साधक के हित में नहीं है या प्रार्थनाकर्ता की लौ उन के मन में प्रज्वलित नही है। ऐसी स्थिती में प्रार्थना को कुछ समय के लिये विराम दे फिर कुछ दिन बाद फिर लय बना कर प्रार्थना करें।

9 <u>कई बार प्रार्थना बार बार करने पर भी मंजूर न होने का कारण क्या है</u>?

अन्तर-विरोधी प्रार्थना, प्रार्थना नहीं होती क्योकि इस मे किसी का अहित प्रार्थनीय होता है । नाकारत्मक प्रार्थना कभी मत करें।

10 <u>जब निर्धारित प्रार्थना स्थल पर किसी कारणवश नहीं पहुँच सकते तब प्रार्थना कैसे करें?</u>

प्रार्थना के लिये कोई स्थान भाषा या दिन निश्चित नहीं , जब मन की स्थिती अच्छी हो करें।जब कभी एक निश्चित स्थान पर पँहुच कर प्रार्थना करना चाहते हैं और आप किसी कारणों वश आप वहाँ

जब आप किसी निश्चित समय व स्थान पर आप नहीं पहुँच सकते तो आप जहाँ कहीं भी है ,वही से सहज और समर्पित भाव में प्रार्थना करें । प्रार्थना आवश्य स्वीकार होगी। प्रार्थना के लिये समय पर न पहुँचने के कारण को भी प्रार्थना में स्पष्ट करें।

11 <u>प्रार्थना के क्या लाभ हैं</u>?

प्रार्थना के माध्यम से आप अपनी सभी दुखों दर्दों व कठिनाईयों का निवारण कर सकते हैं । भावनात्मिक प्रार्थना आप को प्रभु के निकट ला सकती है।

1 प्रार्थना ज्योतिष शास्त्र के सांकेतिक परिणामों को बदल सकती है।

2 जीवन मे सब से बहूमुल्य हैं वे क्षण जब मानव के तार प्रभु से जुडे होते हैं उन क्षणों का बिना देरी प्रयोग करे ।

3 प्रार्थना आप को आप के जीवन के उदेश्य तक ले जाने में सहायक होती है।

12 प्रभु आमने सामने दिखाई क्यों नहीं देता ?

प्रभु मानव से छिपा क्यों रहता है फिर भी हमारे अन्दर आत्मा के रूप में रहते हुए भी हमे दिखाई नहीं देता । प्रभु का स्वरूप तो मान्यता के अनुसार दिखाई देता है। प्रभु का रूप आत्मा की तरह है । आत्मा जिस तरह हमारे

अन्दर रहते हुए भी हमे दिखाई नहीं देती । जब आत्मा शरीर

छोड कर जाती है तो हम आत्मा की उपस्थती का आभास कर पाते है । इसी प्रकार हवा के झोको का एहसास हम कर सकते है पर आँखों से देख नहीं पाते। ऐसे ही हम प्रभु को आमने सामने नहीं देख पाते । परन्तु करोडे में विरले विरले प्रभु को सीधे मिल पाते हैं।

खुदा को दरकार

ज़रा सामने ते आ बेलिया! छुपने में क्या राज़

किधर ढूंढू ,इधर ,उधर या सब ओर

प्यारे! किधर ढूंढूता हैं ज़रा अपने अन्दर तो देख

साहिब जी !क्या करू मुझे दरवाज़ा ही नहीं मिल रहा

बच्चू! पिछले दरवाजे तो आ जा ,मैं ते हाँ ओदर गया

ऐह दरवाज़ा तां तेरे लैयी सदा खुला रहदा है

इस पिछले दरवाज़े तो लंघ के आ जा

मेरे कोलों होर देरी बरदश्त नही कीती जाँदी

जल्दी जल्दी दौडदे दौडदे आ जा प्यारे !

रज रज गलवकडियां पान दा जी करदा है

किस तरां काहां बियान कर सकदा नही ,रिहा जादा नहीं मैं कि करां।

13 <u>क्या आध्यात्मवाद की राह पर बढने के लिये गुरू को अपनाना आवश्यक है</u>।

आप का गुरू कोई भी रूहानी व्यक्ति हो सकता है। कई लोग प्रभु को ही सीधा ही अपना गुरू मान लेते हैं। कई लोग प्रभु को अपना गुरू नहीं मानते क्योकि उन्होने प्रभु के दर्शन साक्षात रूप में नहीं किये। आप का गुरू अनजान राहगीर भी हो सकता है वह देखने पर आप को जान लेता है या समय सीमित वार्तालाप से आप को पहचान लेता है। कई लोग प्रभु को निराकार रूप मे स्वीकार करते है। निराकार रूप मे प्रभु को स्वीकारना प्रभु की उपस्थति को दर्शाता है।

14 <u>क्या प्रार्थना के लिये गुरू का अपनाना आवश्यक है</u> ?

इस का उत्तर जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि

1 गुरू की भूमिका, भक्त को प्रभु के निकट पहुँचाने मे क्या है।

2 कौन गुरू हो सकता है और उस में क्या गुण होते हैं ?

3 गुरू का प्रभु और भक्त के बीच क्या रिश्ता होता हैं?

4 क्या गुरू का ज्ञानी होना आवश्यक है

5 क्या प्रार्थना गुरू का मूल मंत्र है या नहीं ?

प्रभु, पहुँचे गुरू और भक्त के बीच का रिश्ता भावनात्मक तरंगों से जुडा होता है।पहुँचा हुआ गुरू ,एक फकीर भी हो सकता है। एक फकीर की पहचान उस के चोगे, वेषभूषा से नहीं होती।इस के लिये देखने पडते हैं उस के हावभाव और मानंसिक वृत्ति ।एक सच्चा गुरू या फकीर अगर उस का भक्त व शिष्य विदेश मे भी उसे याद कर रहा है तो उस की प्रार्थना स्वीकार कर लेता हैं।गुरू का पढ़ा लिखा और किताबी जानकार होना आवश्यक नहीं , रूहानी अनुभूतियों की जानकारी और प्रभु के निकट होना आवश्यक है।

15 <u>कुछ संत फकीर सिमरण धन गुरू नानक और अन्य ओम नमो शिवायः का सिमरण करने की सलाह देते है, क्या अपनाना चाहिये</u>?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप की गुरू पर कितनी आस्था और विश्वास है। मेरी नजर में पाठ ,सिमरण और सेवा एक ही चीज़ है।

16 <u>प्रभु के रूप व स्वरूप में क्या अन्तर है</u>?

प्रभु का रूप, आकार व स्वरूप है व निराकार व अनेक आकार वाला है। प्रभु

का रूप करोडे में कोई कोई देख पाता है क्योकि प्रभु और साधक के बीच कितनी एकरूपता और अन्तरमन की लै जुडी हुई है। प्रभु का स्वरूप एक ऐसा प्रतिबिन्ब है जिसे उस ने मन में संजोया है।यह प्रतिबिन्ब साधक की अपनी आस्था श्रद्धा और विश्वास के अनुसार होता है। कई साधकों को एक ही स्थान पर कोई स्वरूप दिखाई देता है और अन्य साधक को उसी स्थान पर अन्य स्वरूप दिखाई देता है। कई भक्त प्रभु को पहाडों की शिखाओं पर

भी देख लेते हैं, कई भक्त प्रभु को घने जगलों के पेडों पर भी देख लेते है, कई भक्त प्रभु को मंन्दिर गुरूद्वारे या किसी भी विरान पड़ी ईमारत पर भी देख पाते है। कई भक्त प्रभु को निशान साहिब के उपरी भाग में भी देख पाते है। कई भक्त जिन की लौ प्रभु के साथ जुडी होती है आकाश पर नज़र डालते है तो उन्हे आकाश में प्रभु का स्वरूप दिखाई देता है। कई भक्त प्रभु का स्वरूप घने बादलों में भी देख पाते है। कई भक्तजन एक देश मे होते है और प्रभु को किसी अन्य देश य स्थान पर भी देख पाते हैं।

17 <u>क्या स्व-अनुभूति का प्रसाद संगत में बाँट सकते हैं?</u>

स्व-अनुभूति का प्रसाद केवल उन्ही लोगे मे बांटे जिन की मनोस्थति में एकरूपता हो ताकि इस की बेअदबी न हो। यह आप की अमुल्य निधि है।

आध्यात्मिक राह का दौराहा

आध्यात्मिक राह पर चलते चलते कई बार साधक ऐसे दौराहे पर पहुँच जाता है जहां से राह दो ओर जाती है और मानव यह निर्णय नहीं ले पाता वह किस ओर जाये

1 जब साधक प्रम्परावादी मार्ग की ओर बढता है तो उसे राह में मिलते हैं मंत्र , सामग्री , हवनकुड और पुस्तकें जिस से आगे बढने मे अपनी मंजिल भूल जाता है मंत्र और प्रक्रियों के दौर में अपना जीवन लगा देता है।

2 जब साधक गैरपरम्परावादी मार्ग की ओर बढता है तब राह में चमन के फूलों की ओर देखता रहता है और इन चमन के फूलों को मन-मन्दिर के

खेत मे उगा लेता है और उस की चाहत होती है कि अपनी मंजिल पर पहुँचने पर सब से पहले यह फूल प्रभु को स्वयं अपने हाथो से दे किसी बिचौलिये की ओर से नहीं, जब प्रभु इसे स्वीकार करते हैं तब साधक का हृदय गदगद हो जाता है. खुशी से झूम उठता है कि उदेश्य की मंजिल मिल गई।

3 कई बार साधक दौराहा को ही अपनी मंजिल समझ लेता है और साधक के जीवन में ठहराव आ जाता है और आगे नही बढ पाता।

4 कई बार साधक पुस्तकों से पढी जानकारी प्रवचनों व टी वी पर सुने हूए व्याख्नों की जानकारी को ज्ञान समझ लेता हैं, वास्तव में यह ज्ञान नही जब तक इस मे स्व-अनुभूति न मिली हो, जानकारी को ज्ञान समझने के चक्कर

मे वह अहम के चंगुल में फस जाता है और प्रभु को खोज का विषय मान कर आगे नही बढ पाता और वही एक बिल मे फस जाता हैं। प्रभु खोज का विषय नही प्रभु शास्वत है , अनंत तथा सर्वव्यापक है। प्रभु के अनेक स्वरूप हैं। प्रभु हमे दिखता क्यो नही इस से प्रभु खोज का विषय नही बन सकता। प्रभु को मिलने के लिये प्रभु, गुरू और साधक की भावनात्मक तरंगे में जुडाव तथा एकरूपता का होना आवश्यक है।

प्रार्थना के सूत्रधार

1.खुदा अथवा फकीर से मिली रहमत का कोई मूल्य नहीं होता ।

2. सहज भाव में की गयी प्रार्थना की कोई काट नहीं होती, कोई तन्त्र यंन्त्र व मन्त्र इसे नहीं काट सकते, अन्तरविरोधी प्रार्थना के भाव इसे नहीं काट सकते ।

3. रहमत की दात प्रभु से सीधे, किसी फकीर, अन्जान राहगीर के माध्यम से भी प्राप्त हो सकती है ।

4. बहुत बार मानव अपने उपर अहम की चादर ओढ़ लेता है और उस मे से अहं की बदबू आती है और प्रभु उसे अपने पास नहीं फटकने देते ।

5. प्रार्थना प्रभु दर्पण की नींव है ।

6. प्रार्थना का आनन्द लेने हेतु जब कोई भी फूल,फल, अमृत, दूधव प्रसाद प्रभु को आर्पित करना चाहते हैं तो ऊन्हें अपनी झोली मे रख प्रभु को सहज एवंम समर्पण भाव में प्रार्थना करे ताकि आप का ध्यान विकेन्द्रित न हो और सांसारिक वस्तुओं की ओर आकर्णित न हो और आसपास खड़े व्यक्तियों की उपस्थिति आप के मन से मिट जाये ।

7. बार बार प्रभु से एक ही मांग न करें इस से प्रार्थना मे परम्परावादिता आ जाती है और मांग प्रभु तक नहीं पहुँचती और भावनात्मक सम्बन्ध टूट जाता है । प्रार्थना मे वास्तविक झलक गायब हो जाती है, प्रभु की निकटता को दूरियों में बदल देती है, जिस से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती, ऐसी स्थिती मे मन में कुछ समय के लिये विराम दे ताकि

परम्परावादिता प्रार्थना से दूर हो जाये और प्रार्थना की स्वीकृति में सुगमता हो ।

8. प्रार्थना करते समय अपने ध्यान व उद्देश्य को विकेन्द्रित न होने दें ।

9. जब प्रार्थना करते समय स्वमं की अनुभूति समाप्त हो जाये तो वह प्रार्थना की चर्म सीमा है ।

10. प्रभु को प्रार्थना समर्पित भाव में करें, जल्दी न मचायें । इससे परम्परावादिता आ जाती है, और भावों की उपस्थिति आप के मन से मिट जाती है ।

11. सहज और समर्पण भाव मे प्रभु को समिर्पत प्राथर्ना ग्रहो की चाल और ढाल को बदल सकती है ।

12. तन्त्र यन्त्र और मन्त्र प्रार्थना का विकल्प नहीं हैं, प्रार्थना इन सब से उपर है क्योकि प्रार्थना की तरंगों का सबन्ध प्रभु से सीधा जुड़ा होता है।

13.कई बार प्रार्थना के माध्यम से रहमते-प्रसाद किस्तों में मिलता है क्यो कि प्रार्थनाकर्ता प्रार्थना के किस दौर से गुज़र रहा है यह उस की स्थिती पर निर्भर करता है जिस की आधारशीला प्रार्थनाकर्ता की उस समय की मानसिक स्थिति होती है ।

14. प्रस्पर अन्तर-विरोधी प्रार्थना वास्तव में प्रार्थना नहीं है, कई बार प्रार्थना का दुरूपयोग माना जाता है ।

15. जबआप सांसारिक दायित्वों में उलझे हों और विशेष प्रार्थना स्थल पर नहीं पहुच सकते तब वही से प्रार्थना की स्तिथि बना कर प्रार्थना करें ।

16. कई प्रार्थनाकर्ता कुछ कर कोई मांग नहीं करनी

चाहिये क्यो कि वह सब जानते हैं, प्रभु हमारे परमपिता हैं और हम कुछ भी मानसिक स्थिति के आधार पर मांग सकते हैं ।

17. जब आप का मन आहत हो तब प्रार्थना न करें क्यो कि प्रार्थना में एकरूपता नहीं होती ।

18. प्रार्थना की कोई समय सीमा व आवधि नहीं होती जब चाहों तब पाओं ।

19 प्रभु का प्रसाद के लिये अपने हाथ प्रभु की ओर फैलाने पर और मन के किवाड खुले रखने पर और मानसिक प्रार्थना में जो चाहे, मिलता है ।

20. प्रभु को प्रार्थना के लिये किसी निश्चित स्थान, मन्दिर, मसजिद गुरदुवारे व चर्च में होना आवश्यक नहीं है । आप प्रभु की छत के नीचे भी अर्थात आकाश के नीचें ज़मीन पर खडे हुए प्रभु को प्रार्थना कर सकते हैं ।

21. प्रार्थना के उपरान्त प्रभु का शुकराना करना कभी मत भुले ।

22. प्रभु ! मेरे तन मन और भाव में अपने प्यार की ऐसी जोत जला दो जिस से साध सगंत की सेवा कर पाऊँ ।

23. प्रार्थना चलते फिरते जब आप की मानसिक अवस्था बनी हो कर सकते हैं । आप प्रार्थना गाडी मे सफर करते हुए अथवा हवाई जहाज़ में सफर करते हुए अथवा जंगल व पहाडो पर घुमते हुए भी कर सकते हैं ।

24. प्रभु के चरणों में समिर्पत भाव आस्था श्रद्धा एवमं विश्वास तथा इन सब में मिलन व एकरूपता प्रार्थना की निधि है ।

25. प्रभु ! आप कहां, हम कहां, कैसे हो मिलन ज़रा तो बता दो ।

26. प्रार्थना ज्योतिष्यशास्त्र के सांकेतिक परिणामों को बदल सकती है ।

27. प्रभु से मिली रहमत की दात की कोई छौह नहीं पा सकता ।

28. अन्तर-विरोधी प्रार्थना, प्रार्थना नहीं होती क्योकि इस मे किसी का अहित प्रार्थनीय होता है ।

29. मांग कर मिला रहमत का प्रसाद और बिन मागें मिला रहमत के प्रसाद में अन्तर होता है ।

30. प्रभु कौन है, कैसा दिखता है, उस से कैसै मिल सकते हैं इन सभी प्रश्नो का उतर है, सहज भाव मे प्रभु की ललक बनाये रख कर समर्पित प्रार्थना।

31. प्रभु ! मन की लकीरों को हम नहीं पढ़ सकते पर आप तो जानते हो हमें तो आप ने साध सगंत की आदों को जानने का तोहफा दिया है

उस से भी हम उन की मन की भावनाओं को कई बार नहीं जान सकते, कुछ तो ऐसा कर दो जिन से उन के मन में उन की छिपी चिन्तओं और आरजूओं को आप तक पहुचा सकें ।

32. प्रभु ! तेरे यहां क्या हो नहीं सकता ।

33. जब प्रार्थनाकर्ता किसी दिव्य मुर्ति या एकान्त में या चलते फिरते प्रभु को याद कर प्रार्थना करता है तो वह प्रार्थना का सही रूप है ।

34 शब्दों में भावनायें, भावनाओं में समुन्दर, समुन्दर में लहरें,

लहरों में तरगें, तरंगों में शक्ति, शक्ति में ऊर्जा, ऊर्जा

में प्यार और आसक्ति, प्यार में निकटता, निकटता में तुम और मैं ,फिर एक ।

35. प्रार्थना से प्राप्त अपने अनुभवों को अपने मन मन्दिर में सजो कर रखें और उन्ही लोगों में बांटे जिन की मानसिक स्थिति में इस की ग्रहनशीलता हो ।

36. सेवा की पगडंडियों पर चलते चलते प्रज्वलित होती है प्रभु प्रेम की जोत जिस की निकटता में मिलता है रहमते-प्रसाद ।

37. कई बार मन से की गई प्रार्थना इतनी बहुमूल्य होती है कि उसका अन्तरमन में मूल्य नहीं आंका जा सकता ।

38. किस को कितना दर्द है यह तो वह स्वयं ही जानता है, यह दर्द शारीरिक सांसारिक व अध्यात्मिक है, वह अच्छी तरह जानता है, इस दर्द की दवा भी उस के पास है परन्तु वह उस का प्रयोग करना नहीं जानता, इस दवा का नाम है प्रभु को सहज और निर्मल मन से समर्पण भाव में की गई प्रार्थना ।

39. कई बार जबआप ध्यान में साधनालीन हो आप प्रभु की दिव्यमुर्ति के सामने हो कर अथवा प्रभु की छत के नीचे अर्थात आकाश के नीचे एकान्त में अकेले खड़े हो कर प्रभु को प्रार्थना करते हैं तो कई बार प्रज्वलित जोत की किरणों आप की ओर आती दिखाई देती हैं और कई बार आंखें बन्द करने के उपरान्त खोलने और बन्द करने पर प्रभु के किवाड़ खुल जाते हैं और आप प्रभु के उसी रूप व स्वरूप को देख पाते हैं जिस की आप ने परिकल्पना की है।

40. स्वअनुभूति के आधार पर प्रार्थना इस दुनिया में सब से सशक्त बीज मंत्र है ।

41. प्रभु आया तो तेरे दर पे इस उम्मीद से कि कोई तो अपना है ।

42. प्रभु की निकटता की आसान सीढी है सहज और समर्पित प्रार्थना ।

43. सिमरण के समय प्रभु की निकटता का आनन्द लेते समय प्रभु को प्यार से नमन करे, आशीर्वाद मिलेगा ।

<u>भावनाओं का पुल</u>

1. प्रार्थना करते समय भक्त और प्रभु के बीच भावनात्मक पुल की भुमिका अहम होती है ।

2. कई बार प्रार्थना की तरंगों का मिलान क्षणिक होता है, उस का सदुपयोग करते हुए आगे बडे ।

3. प्रार्थना करते समय भक्त और भगवान मे भावनात्मक एकरूपता की भूमिका अहं है, किसी अन्य द्वारा उसी प्रार्थना स्थल पर प्रार्थना में व्यवधान न डालें, किसी अन्य की प्रार्थना रोक कर अपनी प्रार्थना करना व करवाना वास्तव में प्रार्थना नहीं ।

4. आप का मन प्रभु की दरगाह है ज़हा आपकी मुरादें पूरी होती हैं । भक्त भगवान और फकीर के रिश्ते

प्रार्थना करते समय भक्त और प्रभु के बीच भावनात्मक पुल का काम करती है , कई बार कोई फकीर भी सशक्त भुमिका का काम करता है ।

<u>प्रार्थना भावनाओं का सैलाब</u>

1. वास्तविक आध्यात्मवाद प्रभु मिलन की तरंग है जिस का स्वसगीत मन से निकल कर प्रभु तक सीधा पहुचता है । यह बाद मे अनुभव मे परिवर्तित हो कर जीवन का उद्देश्य बन जाता है ।

2. आध्यात्मवाद सहज ज्ञान की अनुभुति से उपजा महासागर है ।

3 आप का मन प्रभु की दरगाह है ज़हा आपकी मुरादें पूरी होती हैं ।

4. जब प्रार्थना की आवाज़ एवं उद्‌गार ध्वनि में परिवर्तित हो जाये तो यह प्रार्थना के सुरों का रूप ले लेते हैं ।

<u>प्रार्थना का रुप और स्वरूप</u>

1. प्रभु के स्वरूप के दर्शन कभी कभी, कहीं कहीं, कहीं वहीं साक्षात रूप में हो जाते हैं जिस के लिये कोई साधना भी नहीं करनी पडती ।

2. कोई भी व्यक्ति अपने को दूसरों से अधिक जानता है उस ने अगर कोई गलती की है अथवा गुनाह किया है तो भी वह जानता है, अगर कोई अगर कोई अच्छा काम किया है तो भी वह जानता है, और उस की दिशा व मापदण्ड से वह अच्छी तरह से परिचित है और प्रार्थना के माध्यम से प्रभु से परिवर्तन की मांग कर सकता है । प्रार्थना के माध्यम से गलती की क्षमा करने की मांग प्रभु माफ कर देते हैं।

3. पादशाह ! जोड दे मेरे दिल दीयां तारां अपने चरणां दे नाल ।

प्रार्थना का स्वरूप 1

प्रभु ! मै नहीं जानता प्रार्थना कैसे की जाती है पर आप तो मेरे दिल की आवाज़ और मुराद को जानते है कि मेरे दिल में क्या है,कृपया उसे ही मेरी प्रार्थना समझे, स्वीकार करें, धन्यवाद ।

प्रार्थना का स्वरूप 2

प्रभु ! मुझ से कहां, क्या गलती हुई मैं नहीं जानता पर आप तो जानते हो मुझे अपना समझ कर माफ कर दें, फिर गलती न करूँ

गा, यह साहस दे ताकि मै गलती दौराहू न ।

प्रार्थना का स्वरूप 3

आया तो हूँ इस दर पे इस उम्मीद से कोई तो अपना है जो सुनेगा मेरी फरियाद, कृपया, स्वीकार करें धन्यवाद ।

प्रार्थना का स्वरूप 4

साहिब ! तेरा शुक्रिया, तेरा शुक्रिया कैसे करूँ तेरा शुक्रिया ।

प्रार्थना का स्वरूप 5

प्रभु ! कैसे अपने मन की बात सब के सामने बताउँ ज़रा मेरे मन की लकीरों को स्वयं ही पढ़ लो और इसे मेरी इसे मेरी प्रार्थना समझ लो ।

प्रार्थना का स्वरूप 6

नज़रे-ईनायत

एक बार मौका ते दे दो

रज रज गलवखड़ीया पान दा जी करदा है

ऐसा रहमते-दीदार हो जाये,

जिस नाल कुछ मन दी गल कर लईये ,

कुछ मन दी गल सुन लईये

कूझ ऐसा कर दिओ महाराज़!

सकून ते सरूर दा ऐसा दीदार हो जाये

जिस दा रहमते-प्रसाद संगत विच वड़ सकिये

कुछ ऐसी ही दिल दी ख्वाहिश है प्यारे!

हुन ओह मौका कदो दिओगे

साहिबे-हजूर !

इस नज़रां दे रूहानी कैमरे विच

धन गरू नानक

अपने प्यार ते खुशबू दी ओह जोत जला दियो

जिस नाल असी तेरे दर ते झोली फैला खडी

संगतां दे मनां दी तस्बीर लै तुहाड़े

तक सीधी पहुचा सकिये

अस्सी तां तेरे दर दे भिखारी हां

सदरां ते ऊमंगां नाल,प्यार दी गोटी ते सेवा दी दरकार नाल

संगत ने सजाया है ऐह दिले-दरबार

एक वारी दिले-दरबार विच सजे रंगबरगे मन दे बगीचे वल

अपनी नज़रे-ईनायत नाल देख ता लौ

एहो छोटी जैयी फरियाद है साडी ज़रा ता कबूल करो

अदना सेवक

प्रभु से अंन्तरमन संवाद

1. **प्रभु ! संगत बार बार पुछतो है, महक कहां से आ रही है, महकदाता कहाँ छिपा है, क्या बताऊँ ज़रा आप स्वयं ही संगत को बता दो ।**
2. **किस तरां लवां ऊन्हां दिलां दी तस्बीर जिन्हां विच रब तू वसदा ।**
3. **बच्चू ! इन से पुछ कर बताओ कि मेरा कोई धर्म है, मै किस शरीर मे रहता हुँ, मेरा धर्म नहीं बता सकते तो मेरे नाम पर क्यो शोर मचाते हैं, नफरत फैलाते हैं और लडते हैं ।**
4. **प्रश्न: प्रभु ! इस दिल की हालत को तो देख लो ।**

उत्तर: बन्दे ! मुझे पकड कर कसाई को दे, उसे कहो कि मेरे शरीर के टुकडे कर इन लोगों मे बांट दे शायद इन्हे सकून मिल जाये । ये क्यों आपस में मेरे नाम से लड रहे हैं, मुझ से तो इन्हें ने बात तक नहीं की ।

जन मानस का र्दद

कहना तो चाहा बहुत कुछ सुनाना भी चाहा बहुत कुछ जन मानस र्दद का न कोई चोगा मिला न शब्दों को पुशाक मिली किस तरां सुनाऊ इस र्ददे-दिल की दास्तां किस तरां बताऊ र्ददे-दिल तेरे जहां में कोई सुनने वाला न मिला, किसी को सुनाया न गया। प्याला ही तो है जन मानस के दुख र्दद का छटक ही गया।

प्रभु का रूहानी संदेश

1. **प्रभु का मानसिक रूहानी सन्देश "हे मानव ! तुझे मैंने इस दुनियाँ में नंगा धड़ंगा और खाली हाथ भेज़ा है, कोई धर्म, जाति, सम्प्रदाय व अन्य कोई चोगा नहीं पहनाया, केवल इतना ही कहा कि तुम इस दुनिया में जा कर, दुनिया के किसी भी भाग में रहते हुए उन प्रियजनों की सेवा करो जो कई कारणों से मुझ तक नहीं पहुँच पाते और जिन को मेरी सहायता की आवश्कता है, सेवा करो बिना किसी भेदभाव के, अपने पूरे सामर्थ्य, साहस एवं योग्यता के आधार पर, अपने**

परिवार के दायित्वों को निभाते हुए, उन का पालन करते हुए, तुम्हें जब भी इस दुनियाँ के किसी भी कोने में रहते हुए, कोई कठिनाई व बाधा आये, तुम मुझे वही से प्रार्थना के माध्यम से भावनात्मक सन्देश भेजना अथवा सम्वाद स्थापित करना, मैं सारी कठिनाईयों, बाधाओं का निवारण करुगा । तुम मुझे जब चाहो जिस रूप मे चाहो मिल सकते हो, यह मेरी गारन्टी है" ।

2. बच्चू ! देखो तो ज़रा हाथ मे माला, माला पोटली मे,2 बच्चू ! ज़रा देख तांदिल खाली और लोगों को सिमरण का पाठ पढ़ा रहा है ।

3. बच्चू ! तू मेरी चिन्ता छोड , गुरू ते विश्वास रख ,ऊस दी रज़ा विच राज़ी रह, बाकी सब कम मेरा ।

4. बच्चू ! मेरा धर्म सेवा , तेरा कर्म सेवा , निकटता का मर्म सेवा ।

5. बच्चू ! कुछ लोग मेरी गद्धी लगाने पर ही मेरी उपस्थिती समझते हैं, कुछ लोग गद्धी को प्रार्थना स्थल समझते हैं और कुछ लोग मुझे जब चाहे जहां चाहे पाते है, ज़रा अज़मा कर के तो देखो ।

प्रभु से नज़दकियों की लौह

1. प्रभु, फकीर और मानव का कोई धर्म नहीं होता केवल रूहानियत की राह होती है जिस राह वह सभी संगी साथियों को ले कर जाता है ।

2. रब दी लौह दा कोई इक ठिकाना नहीं, रब दी लौह दी ज्योत बिचों निकली महक बहुत दूर दूर तक चाहे ,अन्चाहे राहां तो गुज़रदे होए किथे किथे ही पहुँच जांदी है, उस दी छोह भले ही इन्सान ना पा सके पर उस दी महक तो महरूम नहीं रह सकदा, प्रभु के महक का कोई अन्त या पारावार नहीं ।

2. प्रभु कब, कहां, किस रूप मे मिल जाये, इसे उस का एक अजूबा ही समझो, पर खोज में प्रभु नहीं मिलते ।
3. बच्चू !तू क्यो सोच रहिया हैं कि इतनी भीड़ बिचो धक्का मुक्की सहदा तुहाडे कोल मिलन आवा किस तरां, तू दूर खड़ा रह ते मैं तेरी प्यार दी गली बिचो लंघ के तेरे कोल आ रहिआ हां, मैं तां तेनू देखण लई ओदर गिआ हा, रज रज गलवखड़ीया पान दा जी करदा है , मैं तेरे कोल आ रहिआ हां, मैं तेरे मन दे विच सजाया रंग बिरंगे फूलां दा गुलदस्ता लै के प्यारी ते दूलारी साध संगत बिचँ इन्हां दी खुशबू विखेर दिया गां ते तेनू प्यार दी चाय दा प्रसाद जिना नू जिस तरां चाहे बडदा जा।
4. प्रार्थना करते समय कई बार आँसू स्वत: अवतिरत हो आते हैं ,जो प्रभु की निकटता का प्रतीक है खुशी के आँसू प्रसाद के आँसू हैं, गम के आँसू प्रभु से गिले-शिकवे को दर्शाते हैं ।

5. प्रभु ! अपने सेवक को कदू न बिसारियो । हमेशा साथ रहो जिसे मैं आप द्वारा दी दात को बाँटते समय जब चाहू अपने साथ पाऊँ ।

6 प्रभु ! हर घड़ी सेवक की लाज़ रखना, ताकि सेवक का मन कही भी विचलित न हो । अस्सी ते उन्हां रूहां दे पुजारी जिन्हां विच रब तू बसदा, अस्सी ते उन्हां द़रां दे भिखारी जिन्हां विच रब तू वास करदां ।

7 प्रभु के भक्त तो मिलते हैं परन्तु उन को जानने और पहचानने वाले होते हैं विरले विरले ।

8 भक्त के जीवन मे बहुमूल्य हैं वह क्षण जब भक्त के तार प्रभु से सीधे जुडे होते हैं ।

9 प्रभु को रूपया पैसा नहीं चाहिये, रूपये पैसे से महत्वपूर्ण है फूल, और फूलों से महत्वपूर्ण है मन मन्दिर मे सजोये फूल जिसे प्रभु तुरन्त स्वीकार करते है ।

वास्वतिकाओ का आंगन

1. प्रभु ! मुझे सांसारिक आकर्षणों से दूर तथा दुख व दर्द से परे रखो ताकि मेरा मन साध सगंत की सेवा से विचलित न हो और मैं आप के वरदान से मिली महक, प्रसाद में मिला आप की साध सगंत में

प्यार-स्वरूप बांट सकू । प्रभु ! आप मेरे उद्देश्य में अपनी रज़ा बन कर साथ रहो ।

2. फकीर की नज़दीकियां कई बार भक्त को फकीर और अध्यात्मवाद से दूरियां बड़ा देती हैं ।

3. धर्म और राजनीति जब आमने सामने आ जाये तो सामाजिक संस्था द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को प्रदुषित कर देते हैं ।

4. कैसे सुनाउँ दिले-र्दद की आवाज़, इसे किसी शब्द का चोगा न मिला, दास्तां सुनने वाला न मिला, सुनने वाला मिला, उस से सुना न गया ।

5. प्रभु ! मुझे सोने क्यों नहीं देते नींद नहीं आयेगी तो मेरी शक्ति कैसे दोबारा जागृत होगी और मैं आप की आदेशानुसार अनुसार सेवा कैसे कर पाऊँगा, सुनो तो ज़रा ।

प्रभु को दरकार

1 रबां मेरेया ! किस तरां सुनावां इस दिले दर्द दी दास्तां।

2. साहिब जी ! यह क्या वलवला है, ज़रा तो इधर नज़र मारो ।

3. पादशाह ! कभी कभी दिल मे ख्याल आता है कि यादगार दे इस दिन साध संगत दे प्यार ते ललक दी खुशबू दा एक ऐसा अनोखा ते

निराला गुलदस्ता भेट कर देईये जिस विचो रूहानियत दी दातां दा दरिया झलकदा रहे, जिस दी महक ते दातां नू एह दुलारी ते प्यारी साध संगत खुद महसूस कर सके ।

4. प्रभु तेरे दर पे क्या हो नहीं सकता ?

5 जब आप किसी भी स्थान को धन गुरू नानक का समर्पण करते हुए साध संगत ऊस स्थान पर पोचा लगाती है जहाँ से गुज़र के संगत ने आप के दिले-दरबार जाना है, तो प्रभु आप के मन को स्वत: साफ करते हैं ।

6. प्रभु ! सुबह सुबह जो मन में उपजे भाव थे मन्जिल सामने लगती थी, कुछ ही देर में सब कुछ बदल गया, हृदय में भाव परिवर्तन से मन्जिल दूर होने लगी मैं क्षमा प्रार्थी हुँ, कृपया क्षमा करे ।

7. सहज ज्ञान और समर्पण भाव में की गई प्रार्थना तुरन्त स्वीकार्य होती है क्योकि इस से भावों में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती, भावों में एकरूपता एवम प्रभु के समर्पण की नज़दीकियां स्वत: बन जाती है जैसे एक छोटे बच्चे की प्रार्थना तुरन्त स्वीकार्य है क्योकि इस में कोई मिलावट नहीं होती ।

प्रभु और फकीर का अंन्तरभेद

1. खुदा कब, कहां, किस रूप में मिल जाये, इसे उस का एक अजूबा ही समझो, यह खोज की परिधि से परे है ।

2. प्रभु, फकीर और मानव का कोई धर्म नहीं होता केवल रूहानियत की राह होती है जिस राह वह सभी संगी साथियों को ले कर जाता है ।

3. प्रभु ! क्या समझते हो कि कोहरे की चादर ओढ़ लोगे तो कोई तुम्हे मिल न पायेगा, भक्त दुनिया के किसी कोने से आप को मिल सकता हैं, यह आप ने आशीर्वाद देते हुए गारंटी दी है । क्या अपना वादा तोड पाओंगे ।

4 प्रभु के भक्त की पहचान ऊस के मखौटे से नहीं होती उस के लिये देखना पडता है उस का चेहरा और उस की आकृति, हावभाव, हृदय में छिपे भाव, व्यवहार आन्तरिक श्रद्धा और प्रभु के सर्मपण भाव से जुडे तार ।

5 रब दीयां लीखियां लकीरां नू रब ही बदल सकदा है । कभी कभी कोई पहुचाँ होया फकीर भी रब तो बदलवा सकता है ओर कई बार समर्पित भाव में तुरन्त प्रार्थना के परिणामों के रूख को बदल सकती है ।

6. तेन्हू जानन वाले बाबा ! विरले विरले होन गे, तेन्हू पहचानन वाले विरले विरले होन गे, तेरे दिल दे करीब विरले विरले होन गे, तेरी

ओट दे हकदार विरले विरले होन गे, तेरी सेवा दे हकदार विरले विरले होन गे, तेन्हू निशान साहिब ते देखन वाले विरले

विरले होन गे, तेरी समाध दे दर्शन पान वाले विरले विरले होन गे ।

मन का मोबाइल

कई साधकों को प्रभु का स्वरूप दिखाई ही नहीं देता और उन की चाहत होती है उन्हे एक ऐसा मोबाइल मिले जिस से वह स्वयं प्रभु से सीधे बात कर सके, जब यह फरियाद साहिबे-हजूर तक पहुँचायी गई तो साहिबजी ने बताया मैंने उन्हें मोबाइल दे रखा है ज़रा वे चार्ज तो कर ले , तब साहिबजी को इस विषय को और स्पष्ट करने को कहा, प्रभु ने स्पष्ट करते हुए बताया .....

1 प्रत्येक साधक का मन उसे तोहफे में दिया गया मोबाइल है ।

2 इस मोबाइल को चार्ज करने के लिये कोई रूपया पैसा नहीं लगता ।

3 इस मोबाइल को साधक स्वयं ही चार्ज कर सकता है।

4 इस मोबाइल का चार्जर है, साधक का मन मन्दिर, जहाँ वह दिव्य ज्योति जला कर मन में उपजे फूलों को अर्पित कर सकता है।

5 दिव्य ज्योति की बत्ती समर्पित भावनायें होती हैं।

6 स्व-अवतरित तरंगों इस में घी या तेल का काम करती हैं ।

7 इस की सुवी (डंडी) या अन्य पात्र होता हैं भावों की लहरों से सजी प्रार्थना जो घी का काम करती हैं ।

8 इसे चार्ज करने के लिये अपना समय देना और सिमरण' करना पडता है।

9 प्रसाद होता है चार्जड मोबाइल - मन।

10 प्रभु से बिना किसी लबोलबाब के बात करने हेतू कहीं भी, कहाँ भी ,देश में ,विदेश में मन मोबाइल को इस्तेमाल कर सकते हैं, आप

को कोई बिल नहीं आये गा, रूहानी संदेश के रूप में प्रसाद मिले गा।

निराकार ,साकार और मुर्ति का अंन्तरभेद

जब साथक के मन की स्थिती ऐसी बन जाये कि उस में सहजरूपता बनी हो बिना किसी बाहरी या आन्तरिक दबाव के, तब याद की लौह में मिले हो मन की बगीचे में श्रद्धा सुमन और समर्पण भाव की ललक हो तब प्रभु के किसी स्वरूप अथवा साधक की मन मुराद के अनुसार किसी भी स्वरूप में चाहे, निराकार, साकार, साक्षातकार स्वरूप मे. प्रकट में हो कर आशीर्वाद देते है , साथक के मन की स्थति के हूबहू

रूप में जैसा साधक देखना चाहता है प्रकट होते हैं । ऐसी स्थिती विरले विरले साधको की होती है।

प्राण प्रतिष्ठा और मन प्रतिष्ठा

प्रभु की मन में प्राण प्रतिष्ठा जब आप अपने मन मन्दिर में करेगे तो आप के मन में प्रभु का प्रकटीकरण स्वतः हो जाये गा।

मन मन्दिर का हवन सामग्री

1. **मन मन्दिर मे हवन करने के लिये सोच व नजरिया सामग्री का काम करता है,भावनायें घी तथा तरंगें आग्नि के रूप में मनमन्दिर के हवनकुंड में डाली जाती हैं और इस का परिणाम होता है अनुभूति ।**

2 **हमारा मन हमारे प्रार्थना स्थल की तरह काम करता है, जहां ध्यान लगा कर आप हवन से अनुभूति एवमं अनुभवों का प्रसाद प्राप्त कर सकते हैं । अपने मन मे दिव्य ज्योति को प्रजव्लित कर हवन करे , आनंद आयेगा ।**

प्रार्थना के बाधक तत्व

1. **प्रार्थना के बाधक तत्व हैं , अहं, पुस्तकी ज्ञान जो ज्ञान न हो कर पुस्तकों, ग्रथो व प्रवचनों से प्राप्त जानकारी पर आधारित होता है क्योंकि इस मे प्राय: स्व-अनुभूति नहीं मिली होती । सहज ज्ञान की बड़ी भुमिका होती है ।**

2. अहं और द्वेष ऐसे खट्टे आचार के टूकडे हैं जो बिन बुलाये जीवन में प्रवेश कर लेते हैं और मानव को तहस-नहस कर देते हैं । अपने को दोनों से दूर रखें।

3. प्रभु की निकटता मे बाधक तत्व हैं ज्ञान और अहं । कई बार धन, सम्पत्ति, प्रार्थना मे परम्परावादिता,3 परिवार मोह एवं आसक्ति भी बांधक बन जाते हैं । कभी भी अपने अहं को अपने उपर हावी न होने दें ।

4. ज्ञान व खोज में प्रभु नहीं या देर में मिलते है जबकि सहज ज्ञान और समर्पण भाव में तुरन्त व जल्दी मिलते हैं ।

5. प्रभु ! मै तो मन की दहलीज़ पर बैठा आप की राह बटोर रहा था पर आप अचानक आये, किधर से आये, कहां से आये मुझे आहट तक भी सुनाई नही दी। मैं तो सोच रहा था कि आप के आने पर मैं अपने मन के बगीचे में सजाये तरह तरह के अनोखे और रंग बिरंगे अनुभूति और अनुभव के फूलों से आप का स्वागत करूँगा । प्रभु !

यह फूल भिन्न भिन्न स्थानों पर, आप के आदेशानुसार, साध संगत की सेवा करते हुए मुझे प्रसाद स्वरूप साध संगत ने दिये हैं, ये फूल ला कर मैने इस मन के बगीचे में सजाये हैं और जिन्हें मैंने आप के आशीर्वाद से सीचा है । चाहत तो बडी थी कि इन का एक गुलदस्ता आप को स्वयं आपने हाथों से भेट करू, पर आप

अचानक आये और आते ही गले लगा लिया, इतना प्यार किया कि मैं भाव विभोर हो गया और खुशी के स्वावतरित आँसुओं को ही पोछता रहा, पता ही नही चला ,गुलदस्ता कब भेट करू, कृपया क्षमा करो ।

ज्ञान

1. ज्ञान= जानकारी+ विवेक +स्व-अनुभूति

2. प्राथर्ना से स्व-अनुभूति के द्वारा मिले अनुभव किसी भी प्रवचन, पुस्तकी ज्ञान से अच्छे होते हैं क्योकि उस मे अनुभूति और अनुभव दोनों मिले होते हैं ।

3.पुस्तकी ज्ञान लेने से बहुत बार अहं की धारा स्वत: मन में प्रवेष हो जाती है । मानव स्व-अनुभूति से दूर हो जाता है ।

4.विवेक ज्ञान का आधार है ज्ञान नहीं ।

5. प्रार्थना की स्वीकृति का मूल मन्त्र है कि दुसरे की भलाई के लिये

की गई प्रार्थना प्राय: कारगर होती है पर स्वयं के लिये की गई प्रार्थना बहुत बार कारगर नहीं होती क्योकि उस मे निस्वार्थभाव की कमी रह जाती है ।

6.प्रार्थना के बाद स्वअनुभुति से प्राप्त प्रसाद आप की अनमोल निधि है । यह प्रसाद कई प्रकार का हो सकता है ।

7.अनुभूति और अनुभव से प्राप्त ज्ञान सर्वोपरि है, कोई भी व्यवहारिक ज्ञान,संसारिक ज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान उस के पर्याय नहीं हो सकते। मौज दे मसीहा

1 मानसिक प्रार्थना पादशाह को दुनिया के किसी स्थान से, कही भी की जा सकती है, मानसिक प्रार्थना का कोई निश्चित स्थान, समय, प्रार्थना प्रकिया, आवधि व भाषा नहीं होती ।

2.प्रभु का एक ब्रह्मड्य बसेरा है जिस की विशालता आकाश, पृथ्वी एवं पाताल तक फैला हुआ है । इस में किसी प्रकार का भेदभाव, राजनीति व बंटवारा नहीं किया जाता जबकि मानव का फैलाव कुछ देशों, भाषा, सम्प्रदाय, रंग,रूप एवं कल्पित धारणायें तक सीमित है

3. हजूर ! साडे दिल दी ख्वाईश है कि अपने मन दी पोटली

नू निशान साहिब ते सजा देईये ,पर समय ते सेहत सानू

तूहाडे कोल आन लई मुश्किल पैदा करदा है ।

4 कभी कभी कोई साथक प्रभु के निकट पहुँच कर उस के आंनन्द का आभास करना चाहता है तो कई बार साधक की प्रवृति रसभौर हो जाती तो मानंसिक रूप से लोप हो जाता है और अपना अस्तिव खो बैठता है

तव कई प्रियजन,साधकगण यह समझते है कि वह जीवन की राह भूल गया है। कुछ साधकजन यह भूल जाते है कि जीवन की राह आगे तक जाती है ,यह साधना की लोच की कडी है । बहुत साधक गण उस पर दबाब डालते है कि वह इस रास्ते पर न चले हमारा रास्ता सही है । मंजिल एक है रास्ते अनेक है ।

निर्णय न ले पाने की स्थिती

1 जब कभी भी आप दुविधा में होते हैं और आप समस्त परिस्थितीयों काआंकलन करते समय स्वतन्त्र निणर्य लेने की स्थिती में नहीं होते तव निर्णय को टाल देते है या मुल्याकन नहीं कर पाते तो आप कमेटी बना कर टाल देते है। समय पर सही निर्णय लेना निर्णय की अहम कडी है।

मन के बगीचे के फूल

1. प्रभु को रूपया पैसा पसन्द नहीं बल्कि समर्पण भाव मे मन की दहलीज़ पर उगाये फूल बहुत प्रिय हैं जिन्हे प्रभु को अर्पित किया जाता है ।

2 प्रभु को प्रार्थना करते समय अपने मन में सजोये फूलों को प्रभु को अर्पित करें, ये फूल प्रभु को बहुत प्रिय हैं ।

4. प्रभु मेरे मन मन्दिर में ऐसे फुलों की खेती कर दो जिस का एक गुलदस्ता मैं आप को भेट कर पाऊँ जिस से तेरे प्यार की महक आये ।

प्रभु का मानसिक धन्यवाद

1. प्रार्थना में मानसिक धन्यवाद स्वरूप अर्पित किये गये फूल प्रभु कभी अस्वीकार नहीं करते ।

2. हे प्रभु ! आप का शुकराना करने की अदा तो हमें आती नहीं कैसे करें शुकराना, ज़रा बता तो दो ।

3 हे प्रभु ! आप ने सेवा की सौगात दी, उस का धन्यवाद करने हेतू मेरे पास तो कुछ भी नहीं, कैसे करू शुकराना ?

धन गरू नानक

4 प्रभु ! कभी कभी प्यार का ऐसा चोगा पहना देते हो, बहुत मज़ा आता है और कभी कभी बहुत डाट मरवा देते हो दिल मे बहुत चोट लगती है, मेरा दिल न तोडा करो ।

5 हे प्रभु ! मेरी प्यार नाल उस सेवा दी तमन्ना है जिस विच तेरे प्यार दी महक छिपी होवे ।

6. प्रार्थना के उपरान्त प्रभु का शुकराना करना कभी मत भुले ।

7. वास्तविक आध्यात्मवाद प्रभु मिलन की तरंग है जिस का स्वसगीत मन से निकल कर प्रभु तक सीधा पहुचता है । यह बाद मे अनुभव मे परिवर्तित हो कर जीवन का उद्देश्य बन जाता है ।

8. मानसिक प्रार्थना पादशाह को दुनिया के किसी स्थान से, कही भी की जा सकती है, मानसिक प्रार्थना का कोई निश्चित स्थान, समय, प्रार्थना प्रकिया, आवधि व भाषा नहीं होती ।

9. चब कभी भी साहिबे-हज़ूर आ कर आशीर्वाद दे जाये तो बिना देरी अपने मन से निकलता है साहिबे-हज़ूर ! तेरा शुक्रिया, तेरा शुक्रिया ।

10. प्रभु ! आप ने जो यह सेवा की सौगात दी है इस के लिये आप का बहुत बहुत शुक्राना । कृपया मेरी सेवा में किसी प्रकार की राजनीति, धन व दुर्भावना न आये ।

11. प्रभु कभी कभी ऐसा मज़ा देते हो जिस का तो लुत्फ ही निराला होता है, तेरा शुक्रिया तेरा शुक्रिया ।

मुर्ति और मुकट का हार

बच्चू ! देख ते ज़रा मुझे सोने का मुकट ,सोने का हार पहना कर मुझे प्रभावित करना चाहते हैं इन्हे साफ साफ बता दे, मैं किसी मुकट, हार व किसी दान से प्रसन्न नहीं होता ,मुझे वे भक्त बहुत प्रिय है जो बिना

किसी बनावट के अपनी बात भावनों के माध्यम से मुझ तक ले कर आते हैं और मेरे कान में सुनाते हैं।

तीसरी आँख

गुरू नानक जी के रूहानी उपदेशों के अनुसार उस समय प्रचलित रूहानी साधना को उस समय सुरत (शब्द योग) का नाम दिया जाता था, इस को शब्द-योग, सहज योग या शब्द-अभ्यासभी कहते हैं।

इस अभ्यास में साधक अपने ध्यान और सुरत(आत्मा) की धारा सारे शरीर से पूरी तरह समेट कर आँखों के पीछे एक बिन्दु पर एकाग्र करता है।

इस बिन्दु को परमार्थी भाषा में तीसरी आँख कहा गया है। इसे अन्दर का दसवा द्वार भी कहा जाता है। इसे कई अन्य नामों से भी पुकारा जाता है जिसे तिल घर, घर मंन्दिर, घर, दिव्य दृष्टि, , दर, सोदर, मुक्ति द्वार के नामों से भी जाना जाता है। कई साधक इसे शिव नेत्र कहते हैं।

मुसलमान भाइयों की पवित्र पुस्तकों में इसे नुक्ता-सवैदा या काला नुक्ता भी कहते हैं।

प्रार्थना के माध्यम से जानिये तीसरी आँख के नज़ारे

सहज और समर्पित प्रार्थना भाव से प्रभु को अर्पित की गई दुनिया के किसी भी भाग व देश से प्रस्तुत करने पर प्रभु तक सीधी और तुरन्त पहुँचते हैं। प्रार्थना किसी धर्म भाषा व देश या प्रम्परा से सम्बन्ध नहीं रखती। निशान साहिब के सामने किसी भी स्थान से खड़े हो कर एक भावनात्मक प्रार्थना करते हैं तो आप कई बार पाते हैं कि

1 आप के मन में ऐसी भावनाओं का सैलाब आता है।

2 आप अपनी सुधबुध भूल जाते हैं।

3 आप कहाँ प्रार्थना कर रहे हैं ?, क्या प्रार्थना कर रहे हैं? आप सब भूल जाते हैं। आप के सामने निशान साहिब पर प्रभु का वही स्वरूप देखते है जिस की आप के मन में परिकल्पना थी ।

4 कभी आप एक स्वरूप देखते हैं , अन्य नहीं। आप के मन की स्थिती अनुसार क्षण क्षण समय समय पर स्वरूप बदलता रहता है। यह आप के अन्तरमन की स्थिती के अनुसार बदलता रहता है। कई साधकों के मन की स्थिती में एक रूपता होती है। कई साधक कभी दुनिँया के मन चाहे स्थान पर पहाड़ो की चोटियों पर प्रभु के रूप को देखते हैं। कई बार वह प्रभु को किसी विशेष स्थान पर देखना व मिलना चाहते हैं वे उसी स्थान पर प्रभु के स्वरूप को देख अथवा महसूस कर पाते हैं। कई साधक बार बार प्रयास करने पर भी नहीं मिल पाते क्योंकि उन के मन की स्थिती में एकरूपता नहीं होती ।

5. कई बार भक्त और प्रभु के बीच भावनात्मक संम्बन्धों की तरंगों का पुल बना होता है और उन के बीच भावनात्मक अन्तरमन संवाद हो रहा होता है और कई बार संवाद करते समय आँसू स्वअवतरित बहने लगते हैं। यह सब अंतरमन की नज़दीकियों को दर्शाती हैं और कई बार प्रभु से गिले शिकवे को भी दर्शाती हैं।

6कई बार भक्तअपने लिये भावनात्मक प्रार्थना कर रहा होता है तो कोइ फूल, संदूर, हार या कोई सिक्का या रूपयों का नोट उस के सामने आ कर गिर जाता है। यह प्रभु के आशिर्वाद को प्रतिबिम्बित करते हैं ।

7 कई बार प्रभु बिना बादलों के भक्त को अमृतवर्षा के प्रसाद से उस की झोली भर देते हैं जब कि आसपास के अन्य स्थानों पर ऐसी वर्षा नहीं होती।

8 कई बार प्रभु भक्त को संगत के बीच भेदभावपूर्ण व्यवहार करने पर ऐसी डाँट मारते हैं कि वह अपनी मंजिल ही भूल जाता है।

9 कई बार तीसरी आँख किसी एक व्यक्ति को अपने सामने देख एकागर्चित होने पर अपने सामने खड़े व्यक्ति के हावभाव और उस के अन्दर छिपे दुःख दर्द और चाहत को जान लेता है।

10 बहुत बार साधकों की चाहत होती है कि वह प्रभु को आमने सामने देख कर बात कर पाये इस के लिये अपने मन में प्राण प्रतिष्ठा कर

आप अपने अन्दरआत्मा और परमात्मा की मानसिक मिलान कर दशम द्वार खोल सकते हैं। शेष 9 द्वार(2 आँखे,2 कान ,2नासिका ,मुह, मूत्र, मल द्वार हैं) द्वारो का दरवाज़ा बाहर से खुलता है जबकि दसवा द्वार का दरवाज़ा अन्दर से खुलता है,। कराड़ो में विरले ही प्रभु को साक्षत रूप में देख पाते हैं।

11 कई बार आप निशान साहिब पर खड़े हैं तो किरणों का झुँड आप की ओर बड़ता है और आप की नाभी के स्थान की ओर बड़ता दिखाई देता है और आप का दशवा द्वार अपने आप खुल जाता है।

12 कई बार अचानक आप की नज़र आकाश की ओर जाती है तो घने बादलों में प्रभु के स्वरूप को देख पाते हैं।

13 कई बार आप की नज़र हरे भरे जंगलो की ओर जाती है तो वहाँ भी आप प्रभु के स्वरूप को देख पाते हैं।

14 कई बार पहुँचा हुआ साधक अपनी तीसरी आँख से कहीं भी, समय ,सीमा और काल की परिधि से परे वर्तमान ,भूत तथा भविष्य में घटित घटनाचक्र को देख लेता हैं।

स्व-अनुभूति प्रसाद को बाटँना

1 आप को प्रभु के आशीर्वाद से मिला स्व-अनुभूति प्रसाद को केवल उन्ही लोगो में बाँटे जिन के मन की स्थिती में ग्रहनशीलता हो।

सिमरण

1 मानव जब प्रभु के निकट पहुचने के लिये बुद्धि पर दबाव से सिमरण करने का प्रयोग करता है तो अपना बहुमूल्य समय तथा उर्जा बरबाद करता है अथवा कम करता है ।

2.सिमरण प्रभु के निकट पहुँच कर नमन करने तथा प्रभु के निकट पहुँच कर आनन्द लेने का एक रूप है ।

3.सिमरण के समय प्रभु की निकटता का आनन्द लेते समय प्रभु को प्यार से नमन करे, आशीर्वाद मिलेगा ।

4.समर्पित सेवा और सिमरण में कोई अन्तर नहीं ।

सेवा

1. **सिमरण के समय प्रभु की निकटता का आनन्द लेते समय प्रभु को प्यार से नमन करे, आशीर्वाद मिलेगा ।**
2. **समर्पित सेवा और सिमरण मे कोई अन्तर नहीं, दोनो एकतुल्य हैं ।**
3. **सेवा प्रभु को तभी स्वीकार्य है जब बिना किसी भेद भाव के की जाये ।**

4. प्रभु ! मुझे सोने क्यों नहीं देते नींद नहीं आयेगी तो मेरी शक्ति कैसे दोबारा जागरित होगी और मैं आप की आदेशानुसार अनुसार सेवा कैसे कर पाऊँगा, सुनो तो ज़रा ।

5. इस डगर पे चाँदनी तो फैला दी ज़रा मन चाही खेती भी तो कर दो जिस से मेरी रोज़ी रोटी चलती रहे और सेवा में साकून और तेरी रज़ा की महक आये ।

6. प्रभु ! मेरी रगो में सेवा का ऐसा रंग भर दो जिस से तेरी महक आये ।

7. जब प्रार्थना करते समय स्वयं की अनुभूति खत्म हो जाये तब प्रार्थना में यह प्रभु की निकटता है ।

8. प्रभु ! मेरी तां तुहाडी दिती सेवा दी दात तो दूरी होर वरदाश्त नहीं कीती जांदी ,समय और स्वास्थ्य के बीच कोई बाधा न आये ।

9. सेवा एक प्रकार की नहीं होती ,लोग प्राय: शारिरिक सेवा को ही सेवा समझते हैं सेवा मानसिक व आध्यात्मिक भी हो सकती है ।

10. बच्चू ! जो भी सेवादार सांफ सुथरे मन से महाराज की साध सगंत की सेवा करे गा बिना किसी भेदभाव के प्रभु स्वयं उस सेवादार के सभी काम करते हैं ।

11. प्रभु ! मेरे शारीरिक दुखों दर्दों से छुटकारा दिला दो ताकि मेरा मन साध संगत की सेवा, आप के संग, आप के चरणों और स्तुति में बना रहे ।

12.जब सेवादार साध संगत के जोड़ो की सेवा करते हुए साध संगत के जोड़ो को साफ या पालिश करता है तो प्रभु उस के मन को स्वयं साफ करते हैं। कई बार जोड़ो को साफ या पालिश करते हुए प्रभु की प्रतिमूर्ति भी दिखाई देती है ।

13 प्रभु ! मन दी रूह दी डोर नू एक ऐसी राखी दा रूप बना दियो जिस विच तुहाडी प्यार दा रक्षा कवच सजाया होवे जिस नाल तुहाडी प्यारी ते दुलारी साध संगत दी सेवा करदे रहिये ।

स्वमंथन

1 चुप रैहना या कुछ न बोलना शांति नही है ।

2 जब आप प्रभु की छत्रछाया में बैठ साध संगत की सेवा आप कर रहे है तो कोई तंत्र यंत्र व तांत्रिक आप पर कोई वार नही कर सकता ।

3 प्रभु के काम में व्यवधान डालना प्रभु को न मानंने के तुल्य है ।

4 प्रभु के नाम से एकत्रित राशि को संगत के सेवा कार्यों में प्रयोग न करना उस का दुर्पयोग है ।

परमप्रावादिता

1. छैनें बजाने से प्रभु को कोई कोई छैनें बजाने वाला भी प्रसन्न कर सकता है जब उस के छैनें के ताल और मन के लय में एकरूपता हो पर उस स्थान पर उपस्थित साध संगत बहुत बार मन में उन के मानंसिक स्वरों से उपजे ताल और मन मे एकरूपता लाकर आनन्द लेती है और प्रभु अपने भक्तों को प्रसन्न करने पर दोनों की झोली भर देते हैं ।

2 परम्परावादी और अपरम्परावादी प्रार्थना मे ज़मीन आसमान का अन्तर है, अपरम्परावादी प्रार्थना तुरन्त स्वीकार्य होती है जबकि परम्परावादी प्रार्थना मे भावों और उन के समर्पण में मिलान व एकरूपता नहीं होती अत: प्रार्थना की स्वीकृति में समय लगता है ।

रहमतेप्रसाद

1 साहिब जी!हे महाराज ! आप किधर, हम किधर, हम किधर कैसे हो मिलन, ज़रा स्वयं ही बता दो कैसे करे शुक्राना, इस की अदा तो हमे आती नहीं ।

2 रहमत का प्रसाद मागंने के लिये भिखारी बन कर मन में समर्पण और स्थिरता को अपनाना आवश्यक है ।

3प्रार्थना के उपरान्त मिलने वाले प्रसाद को बिना देरी घर ले जाये

और बांट दे ।

4 प्रसाद किसी भी सेवादार व पुजारी के माध्यम से ग्रहण करते समय अगर प्रसाद गिर जाये तो निश्चित रूप से देने वाले और लेने वाले के मन की स्थिति में सामंजस्य नहीं है ।

5. कई बार आप जब प्रार्थना करते हैं और प्रार्थना स्थल से बाहर आ कर घर की ओर जाने लगते हैं तो रास्ते में आप को किसी अज्ञात व्यक्ति या प्रभु द्वारा आशीर्वाद स्वरूप आप के सामने आ कर खडा हो जाता है या आपके पैरों के पास कोई रूपया या सिक्का गिरा सामने पडा मिलता है,यह प्रभु प्रसाद का प्रतीक है ।

6. रहमत की दात प्रभु कृपा की सौगात है ।

7. प्रभु से मिले रहमत की दात के द्वारा मिले प्रसाद में उस के स्वाद, मिष्ठान और सुगधि को न देख कर दात के स्वरूप, उपहार की महानता और सहजता को देखें ।

8. ज्ञान जिस में अनुभूति और अनभव मिले हों तो यह वह प्रसाद बन जाता है उसे बेचना प्रभु भड़ांरे का अपमान है ।

9. रहमत के द्वारा खुदा से मिली सीधी दात और मांग कर ली दात में ज़मीन आसमान का अन्तर होता है जैसे मेहनत से कमाई और मांग कर लिया दान ।

10. प्रभु ! एक छोटी सी फरियाद तो सुन लो मुझे एक ऐसी चादर पहना दो जिस का मज़ा मैं जहां चाहू जब चाहू ले पाऊँ ।

11. प्रार्थना कभी किसी अन्य साधक से न करवायें करवायें क्योकि किस को कितना दर्द है वह ही जानता है, साधक के माध्यम से उस के दर्द भावों मे मिलान और समर्पण की तरंगो को जोडना कठिन होता है ।

12. पुस्तकी जानकारी को बहुत बार मानव ज्ञान समझ लेता है और प्राय: अहमं के चन्गुल मे फंस जाता है और अपने को प्रभु की निकटता से दूर हो जाता है । वास्तविक ज्ञान स्वानुभूति से प्राप्त ज्ञान है । यह आप की निजी सम्पत्ति की तरह आप के हृदय के निजी गोदाम मे रहती है और ऐसे प्रियजनों में प्रसाद स्वरूप बांटे जो इस की चाहत रखते हैं और इस के हकदार हैं ।

13 प्रभु! . इस दिल की ऐसी पुकार है, प्रभु !रहमत का एक ऐसा मज़ा दें जिस में मिली हो तेरी रज़ा और दुआ ।

14. प्रभु से प्राप्त रहमत का प्रसाद भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न भिन्न हो सकता है क्योकि इस का आधार साधक के मन की स्थिति पर निर्भर करता है ।

15. प्रभु प्यार एक ऐसा भंडारा है जिसे जितना बांटोगे उतना बढ़ेगा ।

16. समर्पित भाव में स्वयं द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना की इस दुनिया में कोई काट नहीं ।

17 रूहानियत दे रूप नू तुस्सी देख नहीं सकते, उस दी महक महसूस कर सकते हो, उस की परिकल्पना कर के आनन्द ले सकते हो ।

18. इसी तरह आप प्रभु को आप आमने सामने चाहने पर भी नहीं देख सकते।

19 कई बार लोग खुदा से सीधी मिली रहमत को उतना आदर व सम्मान नहीं देते जितना देना चाहिये क्योकि ऊन के मन मे भ्रान्ति होती है, क्योकि ऊन्हो ने ऐसी परम्परावादिता की चादर ओडी होती है, जिस को हटाना बहुत कठिन होता है, वे अपना उद्देश्य व मंज़िल अर्थात खुदा की नज़दीकी को प्राप्त करना और खुदा की छोह पा कर तुरन्त फायदा उठाना भूल जाते हैं ।

प्रार्थना का दायरा

प्रार्थना का दायरा इपना व्यापक और इतना विशाल होता है, इसे आप इसे सैंटिरिग वील(STEERING WHEEL) की तरह जो दिशा देना चाहे मोड सकते हो, मुख्य डराईवर(MAIN DRIVER) मानव (साधक) स्वयं है, जैसा चाहे अपनी मानसिक स्थिती और लौह के अनुसार दिशा दे सकता है।

मानव प्रार्थनाकर्ता है, प्रार्थना की स्वीकृति प्रभु के हाथ में है। प्रार्थना को सटेपनी(STEPNE) या दुसरा पहिया न समझे।

प्रार्थना की सोच

1कई साथक स्पष्टीकरण चाहते कि अगर वह मुर्ति पुजन मे विश्वास रखते तो ऊन्हे एक ही देवी, देवता की पुजा करनी चाहिये या वह जिस जिस को भी मानते है तो क्या वह सभी की पुजा-अर्चना एक ही समय पर कर सकते है क्या यह स्वीकार्य हो गी ?

प्रार्थना एवं पूजा का मूल मंत्र है शुद्ध और निर्मल मन का शुद्धीकरण कर प्रभु के स्वरूप मे पुर्ण आस्था और प्रार्थना के समय उस स्वरूप में टिकाव जिसे भी आप उस समय मानते है और मन की लोच जुड़ी हो, आप अपने मन ऊदेश्य और भावनाओं का मिलान कर केन्द्रीकरण कर ऊदेश्य के आगे बड़े।

कई बार हम एक ऐसे स्थान या मन्दिर में मौजूद हैं जहाँ कई देवी देवताओ की मुर्तियां लगी है, आप सभी देवी देवताओ पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते। किसी किसी साधक की मनोस्थिती ऐसी होती

है जो समय और माँग के अनुसार बदलती रही है। केन्द्रीकरण क्षण क्षण में विकेन्द्रीत हो कर पुनः केन्द्रीकरण हो जाता है।

2 कई बार कुछ साथक यह जानना चाहते हैं जब वह किसी प्रार्थना कर्ता के माध्यम से प्रार्थना करवाते हैं तो एक की प्रार्थना प्रभु स्वीकार कर लेते हैअन्य की इस का कारण क्या हैं, प्रार्थना का मूल मंत्र है, साथक के मन की स्थिती और टिकाव तथा प्रभु से म की तरंगों का मिलान, कई बार मिलान नहीं होता और प्रार्थना बीच में ही रह जाती है और प्रभु तक पहुँच ही नहीं पाती स्वीकृति का दरवाज़ा ही नहीं खुल पाता।

खुदा के पास पहुँचने की कुंजी

1 खुदा का घर	हमारा मन मन्दिर
2 स्थान और देश	कहीं भी प्रभु की छत के नीचे, आकाश में ,पाताल में, ब्रहमाण्ड में
3 रूहानी हवन कुड	मन मन्दिर
4 हवन की सामग्री	वैर इंर्षा द्वेष अहं
5 हवन की आहूती	स्वयं की सोच और नज़रिया

6 हवन का घी	**मन की भावनायें**
7 हवन की अग्नि	**मन की तरंगें**
8 हवन की स्रुवी	**प्रार्थना**
9 हवन का प्रसाद	**प्रभु की निकटता और स्व-विवेक**

धूर की बाणी

elahi-Hukama (धूर की बाणी)

Note: elahi-hukama can be sometimes received/ perceived by devotee directly from Almighty in spoken/unspoken words with feel of emotional pulse of wave length depending upon emotional position of devotee which vary from person to person at place/time and linkage with Almighty.

The elahi-Hukam (धूर की बाणी) is a direct reply/ answers to prayer of devotees by God or broadcast of embeded emotions from inner call of soul.It is based on emotions, sentiments, faith and outlook of devotees depending upon entire environmental conditions prevailing arround at the time of Prayer and are co-hyperlinked as a Bridge between devotee and God. It is not based on the place where prayer is being offered or , the Language in which the submissive prayer is offered .It is not concerned with any religion, caste and creed to which devotee or his family is directly or indirectly attached .The elahi-Hukam can be conveyed directly or indirectly to devotee by God ie through someone who knows the mind set up of devotees. It can be conveyed through known or unknown person to devotees. The prayer with experience shows that prayer should be offered by devotee himself as far possible as his problem and gravity of the problem is best known to him only. It has also been noticed that at times some unknown person abruptly appears on scene in front of devotee and ask him or he requests him to help /guide him to offer prayer to God . He is a massager

of God at that moment. It depends upon individualistic mental state of devotee. or Sadh Sangat in togetherness spirit of mind. Godly message can be conveyed while walking in the morning under His umbrella .ie Sky ,traveling in bus ,train or airplane when your mind is submissive mode to Him or at a Gurdwara ,Temple or any together congregation of spiritually or otherwise . It has been noticed that spiritualism is ongoing operative and progressive Roadmap as shown to us by Guru Nanak Dev jee and keeps changing from time to time based on mental state of mind of devotee. Some persons call this elahi-Hukam as explained by Guru Nanak dev jee and mentioned in Guru Granth Sahib.This was later called Hukamnama later which means that it is direct advice or guidance of almighty to devotee .Hukamnama can be hyperlinked to prayer from Guru Granth Sahib or otherwise . Only a few people one out of Crore of devotees has virtually seen God and most of devotees have image frame in mind like प्राण प्रतिष्ठा ie his mind felt His presence. The elahi-Hukam which was known as धूर की बाणी was being conveyed to Guru Nanak Dev jee directly . Guru Nanak Dev jee singled to his associate मरदाना रबाब बज़ा ,धूर की बाणी आई हैं..Mardana took Rabab to spiritual tune and Guru Nanak Dev jee used to sing from his mind as धूर की बाणी which directly received from God and he uttered the words from his mouth and tune of heart .Guru Nanak Dev jee kept with him a Pothi and added in it this धूर की बाणी which was embeded in Guru Granth Sahib by Guru Arjun Dev jee . Guru Nanak Dev jee passed this Pothi i to to Bhai Lehna who was named by Guru Nanak Dev jee as Guru ANGAD DEV jee.This could be felt when moving in park or any place starts singing suo motu any thing musically .

This elahi-Hukam at that time was known as धूर की बाणी I at that time and was taken as godly blessed message, Guru Arjun dev jee when compiled Adi Granth ,the compiled Adi Granth Sahib was placed in Harminder Sahib Amritsar on 30/8/1604 and first Hukamnama was taken from Guru Granth Sahib by Baba Budha jee who was close to Guru Nanak Dev jee from Childhood and then first formal Hukamnama from Guru Granth Sahib was taken and the message was conveyed through

सूही महला ५ ॥ अंक -783 as under

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कमु करावणि आइआ राम

which signify that God himself does all the tasks of its devotees.

Just be emotionally present at any place at any time while walking, or in silence mode through with. His remembrance ,Just think of any digit which come to your mind between 1 to 1430 .This may come to your mind abruptly or see the number of any vehicle which passes in front of you at that moment when you come out of emotional remembrance Zone of God ,select any 3 digit or add forth digit of the vehicle at the hyperlinked time and place and open that page of Guru Granth Sahib and try to match response of your prayer with Godly response in Guru Granth Sahib and try to understand wave length of prayer and linkage with God to identify the response to prayer.If you do not know Punjabi

or Hindi or still you do not understand the meaning of response of your prayer in Gurmakhi ,hindi or English with meaning can be seen and compared infollow the following procedure on internet anywhere in the world.

1 open www.gurugranthdarpan.com

2 click srigranth.org near bottom of front page of website in Red ..

3 The guru granth sahib will be opened where the option to read page by page appears.

4 click page by page option ,the first page of Gurugranth sahib written by Guru Nanak dev jee and compiled by Guru Arjun Dev jee will be opened automatically

5 Replace this page by entering desired page of response to prayer and you ie vehcle no or your mental digit based on any norms and you willl find it in gurmakhi, hindi and English with the meaning written in English

Finally try to match emotionally with your prayer, submissions and response there to.

Remember to thank God for your reply ,response

प्रार्थना और रेकी

प्रत्येक मानव अपने आप को दूसरो से अधिक जानता है, किस को कितना दर्द है ,यह तो वह स्वयं ही जानता है, यह दर्द शारीरिक,सांसारिक व अध्यात्मिक व अन्य किसी प्रकार का भी हो सकता है , मानव ही किसी अन्य व्यक्ति से अपने दर्द को अधिक अच्छी तरह जानता है, दर्द के निवारण के लिये मानव जब कभी भी एक डाक्टर के पास जाता है, तो डाक्टर उस के शरीर की जाँच कर रोग का नामकरण कर दवाई देता है, जो मानव के शरीरिक दर्द को तो ठीक कर देती है परन्तु दर्द के स्तर, सीमा व प्रकार और दर्द के पैमाने और फैलाव को उस के निश्चित स्थान में स्व-अवतरित

किसी पैमाने से दर्द के फैलाव कारणों को नही आँक पाता, दर्द कहाँ से आया नहीं देख पाता । दर्द जब रूहानी ,प्रतिक्रयात्मक सोच व नज़रिये की तरंगो पर आधारित हो मानव स्व-उपजा दर्द का ऐहसास कर पाता है पर आंकलन नहीं कर पाता।

सहज और समर्पण भाव मे प्रभु को समिर्पत प्रार्थना के माध्यम से अपनी सोच और नाकारत्मक नजंरिये को साकरात्मक नजंरिये मे बदल सकता है, इस समय प्राथर्ना स्व-रेकी का काम करती है।

तब प्रार्थना रेकी जीवन में प्रभु के आशीर्वाद से मिला रहमते-प्रसाद का एक ऐसा तोहफा बन जाता है जिसे मानव अपने प्रयास से रेकी की मानसिक सुगंध्य को तथा अपने अंदर बिन बुलाये विकारों को प्रार्थना के माध्यम से बदल सकता है और आगे बडते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है।प्रार्थना एक भावनाओं का भावनात्मक पुल है जो भक्त और भगवान के बीच बना होता है जिस में कई बार प्रार्थना भावनाओं का सैलाब ऊमड पडता है और भावनाओं का स्वसगीत मन से निकल कर सीधा प्रभु तक पहुँच जाता है। प्रार्थना की कोई भाषा, लिपी, निश्चित स्थान अवधि व प्रकिया नही होती, आप प्रार्थना प्रभु की छत के नीचे भी अर्थात आकाश के नीचें ज़मीन पर खडे हुए प्रभु को प्रार्थना कर सकते हैं।

समर्पित तथा सहज भाव में प्रभु को आर्पित स्वःप्रार्थना को जबकभी भी प्रभु से तार मिले हो स्वःरेकी में बदल ले प्रभु स्वयं आप की रेकी कर दे गे और आप के संसारिक दुखों कर निवारण कर दे गे और आप के नजंरिये और सोच को साक्रात्मक बना दे गे जैसा आप चाहते हैं। इस के लिये प्रभु को कोई रूपया पैसा या भेटा नहीं चाहिये। प्रभु को मन की पोटली मे सजाये धन्यवाद के रंगबिरगें भावनाओ फूलों का एक ऐसा गुलदस्ता भेट करे जिस में से खूशी की खुशबू आती रहे।

मंगला-चरण विमोचन

प्रभु !

इस छोटी सी मन की थाली में आप के वरदान से प्रज्वलित दिव्य जोत जला कर, इस बगीचे के रंगबिरगे फूलों से इस पुस्तक का विमोचन-चरण आप से करने की आरती कर रहा हूँ जिस में से किरणो का एक समूह आसपास की संगत को सुगधित करते हुए आगे बढ़ता रहे औरआप के प्यार की खुशबू सदा बाँटता रहू प्रभु ! इसे दिव्य जोत को अखँड दिव्य

ज्योति में परिवर्तित कर दो जो सदा जलती रहे जिसे आप की जो भी प्यारी ते दुलारी साध संगत ग्रहण करे गदगद हो जाये।

धन गरू नानक

पुस्तक की मांग

Anyone who wants the book in question free and committed to spiritual upliftment by reading may send me email at

धन गुरू नानक

jckhurana@gmail.com and the book will be sent by email .Full details of recipients may be given to author/sender. The views expressed are not linked to any religion and only with a motive to uplift the wave length of spiritualism as a mission.

If you want to know more about Prayer visit http:// www.prayersagar.com. If you have any quest or query on the subject, email to jckhurana@gmail.com for reply.